

2. ममान्नीकं सूर्यस्येव दुष्टम् 10, 48, 3. कृतस्य घृष्टं दर्शतमनीकम् (von der Sonne) 6, 31, 1. तदस्मान्नीकमुत चारु नामापीद्यं वर्धते नतुर्याम् 2, 33, 11. 1, 113, 19. 113, 1. 3, 19, 4. VS. 5, 34. — 3) *scharfe Seite* (eines Beils), *Spitze* (eines Speers, Pfeils u. s. w.): तामस्य रीतिं प्रशोरिव प्रत्यनीक-मध्यम् RV. 5, 48, 4. येन वा श्पेरनीकमेति सर्वा वै तेनेषुरिति CAT. Br. 2, 3, 10. अग्निमनीकं सोमं शल्यं विष्णुं कुलमलम् 3, 4, 1, 14. तस्या अग्नि-नीकमासीत्सोमः शल्यो विष्णुस्तेननं वरुणः पर्णानि At. Br. 1, 25. अथ य-च्छल्यो यदनीकमासीत्स सर्वा निर्दृश्यभवत् 3, 26. — 4) *Vorderseite von etwas Aufgestelltem, einer Reihe u. s. w.*; dann *Reihe, Zug selbst* (vgl. *frons*): युक्ते गवामरूपानामनीकम् RV. 1, 124, 11. तेषामप्यसी मृतानामनीकम् 168, 9. 121, 8. 6, 47, 24. अग्निमनीकं कृत्वा CAT. Br. 2, 5, 3, 2. अग्निना रा-ज्ञमिनासिकेन 6, 4, 2—4. अग्निर्वै देवतानामनीकम् 5, 3, 1. — 5) *Heer m. n.* AK. 2, 8, 2, 46. TRIK. 3, 3, 3. H. 746. an. 3, 2. MED. k. 41. दृष्ट्वा तु पाण्डवा-नीकं व्यूढम् Bhag. 1, 2. पदातिश्च महीपालः पुरो ऽनीकस्य योजयेत् Hit. III, 80. रथानीकं शरवर्षान्धकारं चक्रुः Draup. 7, 21; vgl. अग्रानीक. Bildl.: नवान्मुदानीक Ragh. 3, 53. — 6) *Schlacht m. n.* AK. 2, 8, 2, 73. TRIK. 3, 3, 3. H. 797. an. 3, 2. MED. k. 41. — Vgl. चतुरनीक, ज्योतिरनीक, ति-ग्मानीक, त्र्यनीक, पुर्वणीक, स्वनीक.

अनीकवत् (von अनीक) adj. ein *Angesicht* (*Angesichter*) habend oder *ansehnlich*; von Agni: अनीकवत्तमूये ऽग्निं गीर्भर्हि वामहे ein Spruch Âcy. Çr. 2, 18. अग्ने ऽनीकवते प्रथमज्ञासकमेति VS. 24, 16. 29, 59. सेना-न्या गृह्णन्तेत्याग्ने ऽनीकवते ऽष्टास्रपालं पुरोडाशं निर्वपति CAT. Br. 5, 3, 1, 1. 2, 5, 3, 2. Kiti. Çr. 5, 6, 2. 15, 3, 3.

अनीकविदारण (अनीक + विदारण) m. N. pr. ein Bruder Gajadra-  
tha's Draup. 2, 13.

अनीकशस्त्रं (von अनीक) adv. *reihenweise, zugweise*: सेनाः पराजिताः पृती-  
रुमित्राणामनीकशः AV. 5, 21, 9. अनीयेयुधमायतिं केतुन्कृत्वा नीकशः 6, 103, 3.

अनीकस्य (अनीक + स्य) m. 1) *Kämpfer, Krieger* MED. th. 26. (रणा-  
गत) H. an. 4, 131. (अश्वल?) — 2) *Wache, Leibwache* AK. 2, 8, 1, 6. H.  
722. an. 4, 131. MED. — 3) *Abrichter von Elephanten* H. an. 4, 132. MED.  
— 4) *Kriegstrompete* H. an. 4, 131. MED. — 5) = *चिह्न Zeichen* (Signal?)  
H. an. 4, 132. MED.

अनीकिनी (von अनीक) f. 1) *Heer* AK. 2, 8, 2, 46. H. 743. MED. n. 162.  
— 2) *der 10te Theil eines vollständigen Heeres* (अनीकिणी) oder 3 *Ka-  
mū, d. i. 10953 Fusssoldaten, 6361 Pferde, 2187 Elephanten und ebenso  
viele Wagen*, AK. 2, 8, 2, 49. H. 749. MED. n. 162.

अनीचिदर्शनं (अ + नीचिदर्शनम्) m. N. pr. eines Buddha TRIK. 1, 1,  
16. (Wils. in der 2ten Aufl.: अनीच, ÇKDr. wie wir).

अनीड oder ved. अनीऊ (3. अ + नीड, नीऊ) adj. *nestlos*: शाकना  
शको अरूणाः सुपर्णा आ यो नूतः प्रूः सुनादनीऊः RV. 10, 53, 6. Uebertr.:  
अनीडाव्यम् देवम् ÇVETĀCY. Up. 3, 14. ÇAṆK.: नीडं शरीरमशरीराव्यम्.

अनीति (3. अ + नीति) f. *unkluges Benehmen, dummer Streich*: तद-  
नीतिरनुष्ठितानेन PAKṢAT. 143, 25.

1. अनीश (3. अ + ईश) 1) adj. f. आ *nicht Herr, nicht im Stande über  
Etwas zu verfügen* M. 9, 104. R. 5, 33, 45. 31, 10. mit dem gen.: आत्मना-  
प्यनीशः सुवृद्धः अक्षेतोः ÇVETĀCY. Up. 1, 2. — 2) f. *Ohnmacht, Gefühl der  
Nichtigkeit*: समाने वृत्ते पुरुषो निमग्नो ऽनीशया शोचति मुक्तमानः MUND.  
Up. 3, 1, 2. = ÇVETĀCY. Up. 4, 7.

2. अनीश (wie eben) m. (*keinen Herrn über sich habend*) ein Beiname  
a) Vishnu's ÇKDr. (इति तस्य सक्तननाममध्ये), b) Çiva's Çiv.  
अनीशत्व nom. abstr. von 1. अनीश 1. ÇAṆK. zu ÇVETĀCY. Up. 1, 2.  
1. अनीश्वर (3. अ + ईश्वर) adj. f. आ = 1. अनीश 1. R. 6, 101, 10.  
2. अनीश्वर (wie eben) adj. 1) *herrenlos* AV. 12, 3, 42. — 2) *dem höch-  
sten Wesen* (ईश्वर) *nicht eigen*: दक्षेत् — ध्यानेनानीश्वरान्गुणान् M. 6, 72.  
KULL.: ईश्वरस्य परमात्मनो ये गुणा न भवति क्रोधलोभामूयादयः.

अनीह (3. अ + ईह) 1) adj. *ohne Verlangen*. — 2) m. N. pr. eines  
Königs aus der Sonnendynastie LIA. I, Anh. CVII.

1. अनु 1) adv. a) *hinterher* (örtlich) Vop. 9, 18. — b) *später, darauf*:  
न्युता अन्ता अनु दीव आसन् RV. 10, 27, 17. अस्मान्वधिप्यति। अनु दशरत्रिं  
रामम् zuerst uns, darauf Rāma R. 2, 84, 4. Vop. 8, 37. hierauf, nun:  
एतावद्वा इदं सर्वं यद्वं तदात्मन आगासीरनु नो ऽस्मिन्न अन्न आभवस्व BRH.  
Âr. Up. 1, 3, 18. — c) *wiederrum*: यदेवेह तदमुत्र यदमुत्र तदन्विह Ka-  
thop. 4, 10. — d) *ferner, dann, und*: अथ वार्हस्पतः श्रीमान्युक्तः पुष्यो  
ऽनु राघव। प्रोध्यते ब्राह्मणैः प्राज्ञैः केन तमसि दुर्नतः || R. 2, 26, 9. (Gorr.  
2, 26, 11: किं नु वार्हस्पतो योगो युक्तः पुष्येण राघव। प्रो० ब्रा० तद्वैर्येन  
त्व०). — Ein scheinbar adv. Gebrauch des Wortes SV. I, 4, 2, 2, 2. hebt  
sich auf durch richtige Verbindung von अनु mit स्यात्. — 2) praep. a) *ent-  
lang, über* — *hin, längs, an*; α) mit vorang. oder folg. acc.: अदध्रमस्य  
केतवो वि रूमयो व्रता अनु RV. 4, 50, 3. पर्यायवो व्रतेता महीरनु 10, 14,  
1. आ योह्यो यद्याऽनु स्वाः 7, 7, 2. 1, 80, 8. 8, 43, 21. 10, 14, 2. 14. AV.  
6, 69, 2. Verstärkt mit आ (vgl. अधि): धन्वान्वा मंगयसो वि तस्युः RV. 2,  
38, 7. से ऽश्मेधशतेनेष्टा यमुनामनु वीरवान्। त्रिशताश्चान्सरस्वत्या गङ्गा-  
मनु चतुःशतान् || MBu. 7, 2384. निवेश्य गङ्गामनु — चमू R. 2, 83, 26. ध-  
त्रिनो गङ्गामन्वाश्रितान् 84, 1. पम्पानिवासिनामपामनु मन्दाकिनीमपि 3,  
10, 18. 6, 3, 31. सरयूमन्वसो नदीम् DAC. 1, 19. पर्वतमन्वसिता (von मि-  
सेना P. 1, 4, 83. Sch. (= पर्वतेन सह संवद्धा). — β) mit vorang. gen.: ग-  
ङ्गाया अनु वाराणसी P. 2, 1, 16. Sch. — γ) bildet mit dem regierten Worte  
ein adv. comp. P. 2, 1, 16. अनुगङ्गं वाराणसी Sch. अनुनालिनोतीरमाश्रमो  
दृश्यते ÇK. 7, 10. Megh. 21. 31 (an beiden Stellen zu verbinden). Im comp.  
ohne Flexionsendung: गिरिरिव — अनुतटमुप्यतर्षाकार्यष्टिः Vikr. 44.  
— b) *durch* — *hin*, mit vorang. acc.: अतरितं वा अनु रत्नधरति CAT. Br.  
1, 1, 2, 1. अतरितमन्वेमि 22. — c) *zu* — *hin, nach* — *hin*; α) mit vorang.  
acc.: प्रो मे यति धीतयो गात्रा गव्यतीरनु RV. 4, 23, 16. दृषो कृदेवः प्र-  
दिशो ऽनु सर्वाः VS. 32, 4. = ÇVETĀCY. Up. 2, 16. दिशो ऽनु सर्वाः TAITT.  
Ba. 3, 1, 4, 6. यो यो दिशमनु BRH. Âr. Up. 3, 8, 9. वृत्तमनु विद्योतिते विद्युन्  
P. 1, 4, 90. Sch. — β) bildet mit dem regierten Worte ein adv. comp.:  
अनुवनमशनिर्गता (= वनस्य समीपम्) P. 2, 1, 15. Sch. — d) *hinter, hinter*  
— *her*; α) mit dem acc.: ते प्रवृत्तमनु प्रच्योतिस्तस्येश्वरः CAT. Br. 1, 1, 2,  
22. यत्मान एव ब्रह्मनु यो ऽस्मा अरातीयति स उपात्मनु 3, 2, 11. 3, 2,  
2. त्रगामानु पुरोहितम् R. 2, 90, 3. ततः कैतुकादकम्पे तावनु प्रस्थितः  
PAKṢAT. 163, 5. Vgl. इ, गम्, पद्, वर्त् u. s. w. mit अनु. — β, mit dem abl.  
Vop. 8, 56; vgl. u. f, β und u. k. — γ) bildet mit dem reg. Worte ein adv.  
comp.: अनुरथम् = रथस्य पश्चात् P. 2, 1, 6. Sch. — e) *zur Zeit von, um*,  
auch mit Uebergang in die distributive Bedeutung; α) mit dem acc.:  
अग्रे पूर्वा अनूपसो विभावसो दीदेव RV. 4, 44, 10. वर्पश्चित् पतात्रिणो द्विप-  
श्चतुःपद्विनि। उपः प्रारिवृत्तानु 49, 3. पित्रा सोममनूतानु 13, 3. अनु वृत् 71,